B.A 2

Paper IInd

(1)

16/7/20

निवेश की सीमान्त उत्पादकता :-

(The marginal efficiency of investment) - MEI

निवेश की सीमान्त उत्पादकता (MEI) प्रतिफल की वह प्रत्याशित दर है जो किसी पूंजी परिसम्पत्ति पर दिए हुए निवेश से, ब्याज की दर को छोड़कर सभी लागतें पूरी करने के बाद, प्राप्त होनी है। MEC की भाँति, यह वह दर है जो किसी पूंजी परिसम्पत्ति की पूर्ति कीमत को उसकी प्रत्याशित आय के बराबर लाती है। किसी परिसम्पत्ति पर किया जाने वाला निवेश इस बात पर निर्भर करेगा कि बाजार से निधियों की प्राप्ति के लिए ब्याज की दर कितनी है। यदि ब्याज की दर अधिक होगी, तो निवेश का स्तर कम रहेगा। ब्याज की दर कम होने से निवेश अधिक होगा। इस प्रकार MEI निवेश को ब्याज की दर से सम्बद्ध करता है। MEI वक्र यह दिखाती है कि ब्याज की विविध दरों पर निवेश की माँग की मात्रा कितनी होगी। यही कारण है कि इसे निवेश माँग अनुसूची या वक्र कहा जाता है जिसकी ढलान ऋणात्मक होती है, जैसा चित्र (1) के भाग (A) में दिखाया गया है। ब्याज की Or_1 दर पर निवेश की मात्रा OI' है। जब ब्याज की दर गिरकर Or_2 हो जाती है तो निवेश बढ़कर OI'' हो जाता है।

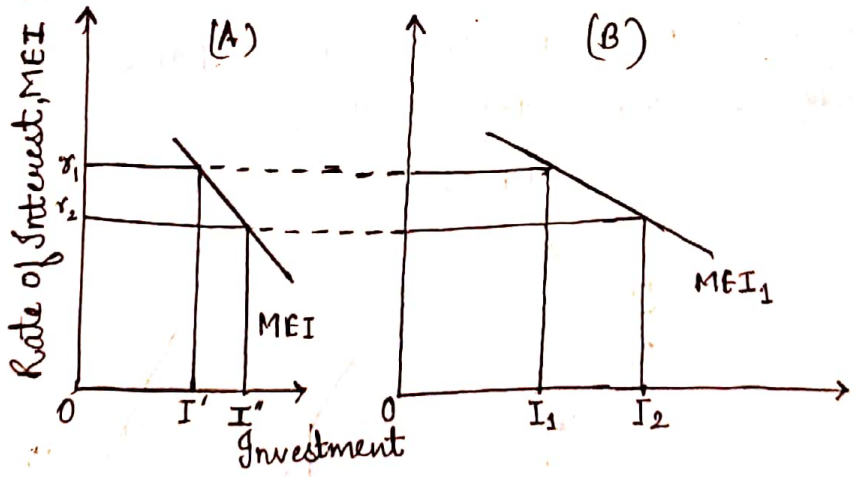

(चित्र - 1)

ब्याज की दर गिरने से निवेश किस सीमा तक बढ़ेगा, यह MEI वक्र की निवेश माँग वक्र की लोच पर निर्भर करता है। MEI वक्र जितना कम लोचदार होगा, ब्याज की दर गिरने के परिणामस्वरूप निवेश में वृद्धि भी उतनी ही कम

Scanned by CamScanner

होगी और विलोमशः भी।
चित्र(1) में अनुलम्ब ब्याज अक्ष ब्याज की दर तथा निवेश की सीमान्त उत्पादकता को मापता है, क्षैतिज अक्ष निवेश की मात्रा को मापता है, MEI तथा MEI' निवेश माँग वक्र हैं। चित्र(1) के भाग (A) में MEI वक्र कम लोचदार है, इसलिए निवेश में I'I" मात्रा की वृद्धि होती है जो भाग(B) में दिखाई गई निवेश की I_1I_2 वृद्धि से कम है जहाँ MEI' वक्र लोचदार है। इसलिए प्रकार, MEI वक्र की आकृत्ति तथा स्थिति के दिए हुए ब्याज की दर गिरने पर निवेश का आकार बढ़ जाएगा।
दूसरी ओर, ब्याज की दर दी हुई होने पर, MEI जितना अधिक ऊँचा होगा, निवेश का आकार भी उतना ही अधिक होगा। निवेश की अपेक्षाकृत अधिक सीमान्त उत्पादकता का मतलब है MEI वक्र दाईं ओर को सरक जाएगा। जब वर्तमान परिसम्पत्तियां घिस जाती हैं, तो उनके स्थान पर नई परिसम्पत्तियां लगाई जाती हैं और निवेश का स्तर बढ़ जाता है। परन्तु प्रेरित निवेश कुल क्रय के वर्तमान स्तर पर निर्भर करता है। इसलिए जब कुल क्रय बढ़ता है, तो प्रेरित निवेश भी बढ़ जाता है। बढ़ा हुआ कुल क्रय MEI को दाईं ओर सरका देता है जिसका मतलब है कि ब्याज दर के किसी दिए हुए स्तर पर निवेश को अधिक प्रेरणा मिलती है। इसे चित्र-2 में स्पष्ट किया गया है जहाँ MEI_1 तथा MEI_2 वक्र अर्थव्यवस्था में कुल क्रय के दो विभिन्न स्तरों को दर्शाती हैं। हम मान लेते हैं कि जब कुल क्रय की मात्रा 200 करोड़ रु है तो ब्याज की Or_1 दर पर OI_1 (अर्थात् 20 करोड़ रु. का) निवेश होता है। जिसे MEI_1 वक्र व्यक्त करता है यदि कुल क्रय बढ़कर 500 करोड़ रु हो जाता है तो MEI_1 वक्र दाईं ओर को सरककर MEI_2 पर चला जाता है और ब्याज की उसी Or_1 दर पर प्रेरित निवेश OI_2 (अर्थात् 50 करोड़ रु) होता है।

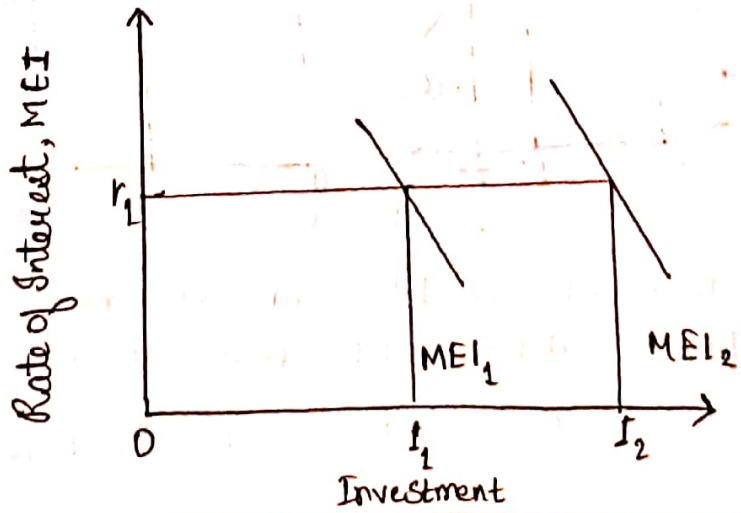

(चित्र-2)